जार्ज वाशिंगटन कार्वर

अरविन्द गुप्ता

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

जार्ज वाशिंगटन कार्वर :
George Washington Carver
अरविन्द गुप्ता : *Arvind Gupta*

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन : अविनाश देशपांडे
लेजर ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

पांचवां संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य : 15 रुपये

Published by Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
Printed at Sun Shine Offset , New Delhi - 110018

जार्ज वाशिंगटन कार्वर

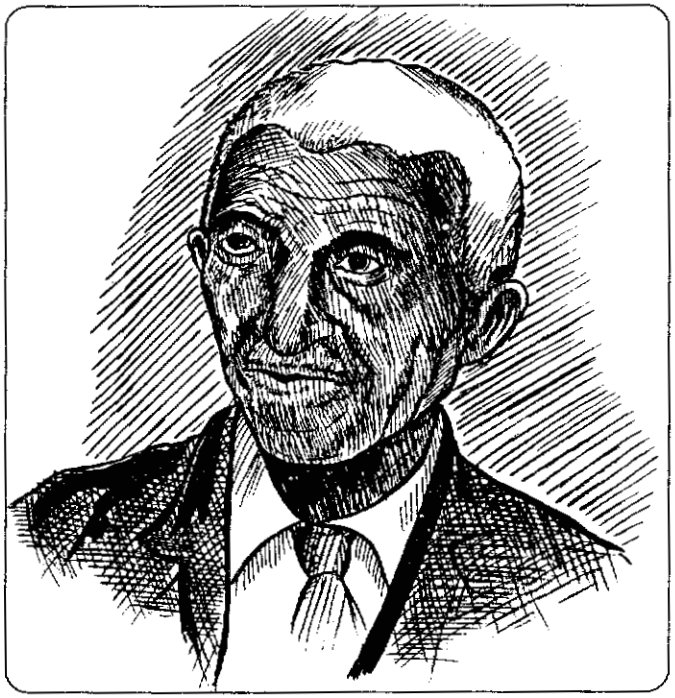

अरविन्द गुप्ता

जार्ज वाशिंगटन कार्वर

जार्ज वाशिंगटन कार्वर का जन्म 1864 में अमरीका में हुआ था। उनके मां–बाप नीग्रो गुलाम थे और एक बड़े फार्म पर काम करते थे। फार्म के मालिक मोज़िज और सूजन क़ार्वर थे। वह मूल रूप से जर्मन थे। जब जार्ज केवल साल भर का था तभी एक दुर्घटना में उसके पिता का देहांत हो गया था। उसके कुछ दिनों बाद ही जार्ज की मां को लुटेरे पकड़ कर ले गए। इन लुटेरों का काम गुलामों को ऊंचे दामों पर बेंचना था।

जार्ज उस समय बेहद कमज़ोर था और उसे काली खांसी थी। शायद इसीलिए लुटेरे उसे रास्ते में ही छोड़ कर चले गए। मोज़िज ने जार्ज और उसकी मां मेरी को तलाशने के लिए कुछ नौकर भेजे। एक नौकर ने जार्ज को सड़क पर पड़ा पाया। उसने बच्चे को उठा कर मोज़िज/सूजन को दिया।

मेरी के बच्चे को पाकर मोज़िज/सूजन बेहद खुश हुए। मेरी को वह अपने परिवार का ही एक सदस्य मानते थे। अब मेरी का बच्चा उनकी गोदी में था। बच्चा ठंड से अकड़ गया था और रुक–रुक कर सांसे ले रहा था। बच्चा एकदम अधमरा था। उसके बचने की कोई उम्मीद न थी।

बाहर एक फुट गहरी बर्फ जमी थी। सूजन बच्चे को आंच के पास लाकर बैठी जिससे कि बच्चे के ठंडे शरीर में गर्मी आए। सूजन, बच्चे के जीवन के लिए प्रार्थना कर रही थी और उसे चम्मच से दूध

पिला रही थी। पहले तो बच्चे ने बिल्कुल दूध नहीं पिया। परंतु जैसे ही उसके शरीर में गर्मी आई वैसे ही उसने सारा दूध पी लिया। सूजन की आंखों में आंसू छलक उठे। वह खुश थी कि भगवान ने उसकी प्रार्थना सुन ली।

सूजन ने बालक जार्ज को अपने ही बच्चे की तरह पाला। धीरे–धीरे जार्ज बड़ा हुआ।

जार्ज कमज़ोर सेहत के बावज़ूद हर काम को बेहद मन लगा कर करता। वह खाने बनाने में सूजन की मदद करता। सूजन भी बहुत दयालु प्रकृति की थी। वह भी जार्ज को बेहद प्यार करती थी।

जार्ज में हर चीज़ को सीखने की ललक थी। जब सूजन स्वेटर बुनती होती तो जार्ज उसे बड़े ध्यान से देखता। फिर वह बाहर से दो चिड़ियों के पंख उठा लाता और सूजन चाची के पास बैठ कर पंखों की सिलाइयों से खुद बुनाई करने लगता।

और जब चाची कढ़ाई करतीं तो जार्ज भी उनके साथ कढ़ाई करता। उसके सारे डिज़ाइन प्राकृतिक पत्तियों, फूलों आदि पर आधारित होते। प्रकृति के नमूने उसे बेहद पसंद आते। जब चाची सूत कातती होतीं तो जार्ज उनके पास बैठ कर चरखा चलाता। उसे चाची के साथ काम करने में बहुत सुख मिलता था।

सूजन ने जार्ज को खाना पकाना सिखाया और जल्द ही जार्ज उम्दा किस्म की मक्का की डबल रोटी बनाने लगा। उसने कपड़े धोना और उनकी मरम्मत करना भी सीखा। उसे ऐसा कभी भी नहीं लगा कि यह लड़कियों का काम है। और धीरे–धीरे वह फार्म पर भी काम करने लगा।

फार्म का काम कठिन था। सुबह से लेकर रात तक जी–तोड़ मेहनत करनी पड़ती थी। चीनी और कॉफी के अलावा बाकी सभी

चीज़ें फार्म पर ही उगाई या तैयार की जाती थीं। जार्ज फार्म पर भरसक मेहनत करता। जार्ज बेहद होशियार था। सभी लोग उसकी अक्ल की दाद देते थे।

फार्म पर बहुत कुछ पैदा किया जाता था। सबके लिए पर्याप्त खाना था। परंतु फेंकने और बरबाद करने के लिए कुछ भी न था। जर्मन दम्पति ने किफ़ायत और मेहनत के दो अहम सबक नन्हे जार्ज को सिखलाए। जार्ज इन सीखों को जीवन भर नहीं भूला।

फार्म पर जार्ज ने एक खुशहाल बचपन बिताया। वह अपने हाथों से बहुत कुछ करना जानता था। उसके छोटे हाथों में बीमार पौधों में नई जान फूंकने की अद्‌भुत क्षमता थी। सूजन कार्वर के बगीचे की सभी पड़ोसी प्रशंसा करते। वहां पीले गुलाब के फूलों पर एक अजीब सी मुस्कुराहट थी। दूसरे फूलों की खुश्बू भी दूर--दूर तक हवा को महकाती थी। जार्ज, अपनी नन्ही उंगलियों से पौधों की देखभाल करता था।

सूजन को अक्सर ऐसा लगता जैसे कि जार्ज पौधों से कुछ बातें कर रहा हो।

खेती के जो गुर किसान बहुत अनुभव और मशक्कत के बाद सीखते हैं, वह नन्हे जार्ज ने सहजता से सीख लिए थे। ''जार्ज की उंगलियों में जादू है,'' सूजन कार्वर यह कहते नहीं थकती थीं।

एक बार मोज़िज एक सेब के पेड़ से अच्छी फसल की उम्मीद कर रहे थे। परंतु जार्ज ने पेड़ को एक नज़र देखा तो उसे कुछ गड़बड़ लगी। उसने एक टहनी को जब तोड़ा तो वह खोखली निकली और उसमें बहुत से कीड़े रेंगते दिखाई दिए।

मोज़िज को विश्वास न हुआ, ''इतनी दूर से तुम्हें यह कैसे पता चला'' उसने जार्ज से पूछा।

''भगवान ने मुझे बताया,'' जार्ज का सरल सा उत्तर था।

अब तो पास--पड़ोस के सभी किसान नन्हे जार्ज से खेती के बारे में सलाह--मशविरा लेने के लिए आने लगे।

''मेरे गुलाब के फूल क्यों मुरझा रहे हैं,'' श्रीमती बेन्हेम ने पूछा। जार्ज उन गुलाब के पौधों को जंगल में ले गया। वहां एक छोटे से स्थान पर जार्ज पौधों की देखभाल और तीमारदारी करता था। जब गुलाब दुबारा ठीक होकर खिलने लगे तो जार्ज ने उन्हें श्रीमती बेन्हेम को वापिस कर दिया।

जार्ज के लिए पौधे बीमार बच्चों की तरह थे। वह उनकी बेहद लगन और प्यार से सेवा करता था। कुछ पौधों को धूप की ज़रूरत होती है तो कुछ को छांव की। कुछ पानी में पनपते तो कुछ रेत में। पौधों की देखभाल करते–करते जार्ज यह सवाल पूछने लगा:

''घास हरी क्यों होती है? सूरजमूखी के फूल पीले और गुलाब गुलाबी रंग के क्यों होते हैं? अगर मैं एक पीले और लाल गुलाब को साथ–साथ उगाऊं तो क्या उनका रंग आपस में मिल जायेगा? पत्तों के आकार अलग–अलग क्यों होते हैं?''

इतवार वाले दिन जब जार्ज की छुट्टी होती थी तो वह जंगल में अकेला चला जाता था और अपने आस–पास की प्रकृति को बहुत ध्यान से निहारता रहता है। वह चुपचाप बैठा सुनता रहता और ऐसा लगता जैसे कि जंगल उसके कानों में सैकड़ों बातें कह रहा हो। कितनी जटिल और जादुई है प्रकृति की दुनिया? उसके लिए पृथ्वी एक खज़ाने के डिब्बे की तरह थी जिसके रहस्यों को वह खोल कर देखना चाहता था।

वह गिरे हुए पत्तों को उठाता और उनके नीचे उगते जंगली फूलों को खिलते हुए देखता। वह पेड़ की छाल के नीचे रेंगते हुए कीड़ों को देखता। जंगल के पक्षी, पेड़ और फूल ही उसके खिलौने थे और जार्ज उन्हें बहुत प्यार करता था।

उसे लगता था कि प्रकृति की इस झांकी के पीछे कोई अलौकिक शक्ति है। वह बहुत कुछ जानना चाहता था। उसको अपने सवालों के जवाब कहां मिलेंगे?

सूजन ने कहा, ''तुम्हें स्कूल जाना चाहिए''।

''परंतु एक नीग्रो शिक्षा का क्या करेगा?'' मोज़िज ने पूछा।

सूजन इसका जवाब नहीं दे पाई, परंतु वह जानती थी कि जार्ज को स्कूल जाना पड़ेगा।

एक दिन मोज़िज अपनी घोड़ा गाड़ी में एक प्रगतिशील स्विस किसान हरमन से मिलने गए। जार्ज को वह साथ में ले गए। जार्ज ने इतने सुंदर अंगूर के बाग पहले कभी नहीं देखे थे।

''यह वही लड़का है जो मेरे बाग की देखभाल करता है,'' कार्वर ने कहा, ''यह पौधों का जादूगर है।''

हरमन ने जार्ज के हाथों और उंगलियों को गौर से देखा:

''भगवान ने तुम्हें अद्‌भुत हाथ दिए हैं। तुम बहुत कुछ जानते भी हो। परंतु तुम्हें लिखना–पढ़ना सीखना चाहिए और फिर यह पृथ्वी अपने सारे रहस्य तुम्हारे लिए खोल देगी।''

जार्ज बड़े ध्यान से सुनता रहा।

हरमन ने कहा, ''यह सब खेत, अंगूर के बाग और इनके पीछे की सारी पहाड़ियां भगवान की हैं। और वही भगवान तुम्हारे पिता हैं।''

जार्ज कुछ बोल न सका। उसका दिल भर आया था। जो कुछ सपने उसने संजोए थे हरमन उन्हीं को शब्दों में कह रहा था। जार्ज अपने आपको अब एक नीग्रो और अनाथ नहीं महसूस कर रहा था। वह अब दुनिया में अकेला नहीं था। भगवान उसके साथ थे।

हरमन ने जार्ज को पौधों पर एक पुस्तक भेंट की, ''इसे पढ़ना,'' उसने कहा, ''और जितनी भी किताबें पढ़ोगे उतना ही अच्छा होगा।''

मोज़िज कार्वर से हरमन ने कहा, ''तुम इस लड़के को अवश्य स्कूल में भेजो!''

इस घटना के बाद नन्हा जार्ज बार–बार पूछता, ''मोज़िज चाचा, मैं कब स्कूल जाऊंगा?''

परंतु मोज़िज मज़बूर था। वह नन्हे जार्ज को असलियत बता कर उसका दिल नहीं तोड़ना चाहता था। आसपास केवल एक स्कूल था और वह नीग्रो बच्चों को नहीं लेता था।

परंतु जब जार्ज को इस सत्य का पता चला तो उसे बेहद दुख हुआ। उसकी आंखों में आंसू छलक उठे।

क्यों? वह क्यों नहीं स्कूल जा पायेगा? क्योंकि उसकी चमड़ी का रंग काला है? क्या त्वचा का रंग इतना महत्वपूर्ण है? क्या वह अपने चाचा–चाची से कुछ अलग है? यह सच है कि उनकी चमड़ी गोरी है! पर वह भी उनके समान सब कुछ कर सकता है! उसने इस बारे में बहुत सोचा। फूलों का रंग अलग–अलग होता है, फिर भी वह सभी फूल ही होते हैं।

सूजन ने अपने संदूक में से एक पुरानी किताब निकालकर जार्ज को पढ़ना सिखाया। जल्द ही जार्ज को पूरी किताब मुंह–जुबानी याद हो गई। मोज़िज ने उसे गणित के सरल सवाल करना सिखाए। यह तो केवल शुरुआत थी। उसे अभी बहुत कुछ सीखना था। उसे चाचा–चाची को छोड़कर नीओशो जाना पड़ेगा। वहां पर एक स्कूल था जिसमें नीग्रो बच्चे पढ़ सकते थे।

फिर एक दिन जार्ज, चाचा–चाची का घर छोड़ चला। सूजन ने मोज़िज के कपड़ों को काट–छांट कर जार्ज के लिए एक जोड़ी कपड़े बनाए। जार्ज ने मोज़िज के पुराने जूते भी पहने! घर छोड़ते वक्त उसके पास केवल एक शाल, दो सेब, कुछ सिक्के और दो किताबें थीं। जार्ज घर का सब काम करना जानता था और सूजन को विश्वास था कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो पायेगा। ''किसी बड़े घर में जाना और कहना कि तुम खाना पका सकते हो,'' सूजन ने कहा।

मोज़िज ने जार्ज को समझाते हुए कहा, ''और यह पक्का करना कि तुम्हें अपने काम के लिए पैसे मिलें।''

जार्ज ने अपना सिर हिलाया। वह इन सब बातों को याद रखेगा। उसने आखरी बार अपना हाथ हिलाया और सड़क पर चल पड़ा। वह अपना एक मात्र घर छोड़ रहा था। उसने अपनी आंखों के आंसू पोछे। उसे सबसे पहले स्कूल में पढ़ना था। यह उसका पहला कदम था।

जो पैसे उसके पास थे उससे उसने स्कूल की फीस भरी। वह केवल चौदह साल का था। स्कूल में उसके ढीले–ढाले कपड़े देख बच्चे उसका मज़ाक बनाते। जार्ज बच्चों के उपहास को शांति से सहता। उसका एक मात्र उद्देश्य स्कूल में पढ़ना था।

स्कूल की छुट्टी के बाद वह कई घरों में बर्तन मांझता, कपड़े धोता, झाड़ू लगाता और लकड़ी काटता। इस प्रकार वह अपना पेट भरता। जब उसे कोई काम नहीं मिलता तो वह भूखा रहता। परंतु उसने एक दिन भी स्कूल से छुट्टी नहीं ली!

रात को एकदम पस्त होकर वह एक छोटी कोठरी में आकर पुआल के ढेर पर लेटकर सो जाता। जाड़ों की एक रात तो इतनी बर्फीली हवा चली कि जार्ज का शरीर एकदम जम गया। वह रात भर अपने एक जोड़ी सूती कपड़ों में ठिठुरता रहा। जब वसंत आई तो वह उस जाड़े को एक बुरे सपने की तरह भूल गया। शायद भगवान की कृपा ही उसे ज़िंदा रखना चाहती थी। उसने निश्चय किया कि वह बड़ा होकर इंसानियत की भलाई के लिए कोई नेक काम करेगा।

वसंत में स्कूल बंद हो गया क्योंकि उस समय खेतों में बुआई का काम करने के लिए बच्चों की ज़रूरत होती थी। जार्ज को जॉन और लूसी मार्टिन ने अपने घर में पनाह दी। इस नेक दम्पत्ति ने जार्ज को एक पलंग दिया और पढ़ने के लिए किताबें दी। जार्ज दिन भर कड़ी मेहनत करता। वह सुबह उठकर नाश्ता बनाता और पढ़ाई खत्म होने के बाद बाग में काम करता। उसकी उंगलियों के स्पर्श से फूल मुस्कुराने लगते। जल्द ही पूरा बाग खिलखिला कर हंसने लगा।

मार्टिन ने कहा, ''तुम्हारे हाथों में तो कमाल का जादू है''। अब तक जार्ज की शोहरत दूर–दराज़ तक फैल चुकी थी। अब स्कूल में उस पर कोई हंसता नहीं था। सभी लोग उसकी तारीफ़ करते और उसके साथ इज़्ज़त से पेश आते।

जब लूसी मार्टिन बीमार पड़ी तो घर का पूरा काम जार्ज ने संभाला, काम खत्म होने पर जॉन उसे पढ़ाता। जॉन एक बढ़िया शिक्षक था। स्कूल से कहीं ज़्यादा तो जार्ज ने घर पर जॉन से सीखा।

पर तभी जॉन मार्टिन का तबादला हो गया। जार्ज को छोड़ते हुए उन्हें बहुत दुख हुआ। अब जार्ज एक नीग्रो दम्पत्ति – ऐंडी और मारिया वाटकिंस के साथ रहने लगा। मारिया दूसरों के कपड़े धोती थीं। दिन में जार्ज स्कूल जाता और शाम को मारिया के साथ कपड़े धोता।

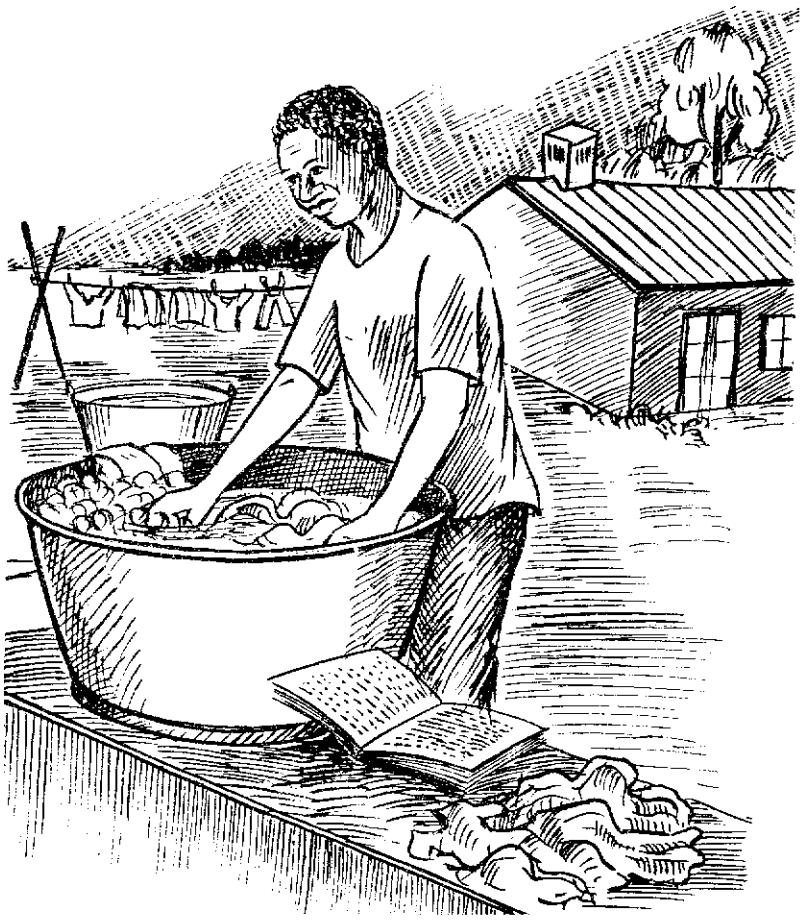

जार्ज की किताब कपड़े धोने वाले टब के ऊपर खुली रहती। वह साथ–साथ कपड़े भी धोता रहता और और पढ़ता भी रहता। मारिया एक अच्छी इंसान थी। मारिया जार्ज से कहतीं, ''जब तुम पढ़ लिख जाओ तब तुम नीग्रो लोगों को पढ़ाना। उनमें पढ़ने की बहुत भूख है!'' जार्ज इन शब्दों को कभी नहीं भूला। ऐंडी ने जार्ज को बाइबिल पढ़ने को दी।

शाम को, सूरज ढलने के बाद जार्ज ने बाइबिल पढ़ी। कुछ बातें उसके दिल को इतना छू गयीं कि उसकी आंखों में आंसू छलक उठे।

जार्ज द्वारा बाइबिल की कहानियों को सुनने के लिए लोग दूर–दूर से आने लगे। जार्ज की भावुकता और उसकी मधुर आवाज़ को सुन कर लोग रो पड़ते।

स्कूल की पढ़ाई अब खत्म हो गई थी। जार्ज ने अब वाटकिंस दम्पत्ति से विदा ली। चाची मारिया ने जाते समय उसे बाइबिल भेंट की।

कुछ समय बाद उसे एक होटल ''*विल्डर हाउस*'' में धोबी की नौकरी मिली। जार्ज वहां पर अनेकों मुसाफिरों से मिलता और उनसे नई–नई बातें सीखता। वह खाना पकाने में रसोईए की मदद करता। इस प्रकार उसे भर पेट भोजन मिल जाता।

इस पूरे दौर में जार्ज मेहनत करके पढ़ाई करता रहा। वह अब लिख–पढ़ सकता था परंतु उसे इतिहास और भूगोल जैसे विषयों का कुछ भी ज्ञान न था। परंतु वनस्पतिशास्त्र के बारे में तो वह अपनी टीचर से भी कहीं अधिक जानता था।

जब कभी जार्ज को थोड़ा भी खाली समय मिलता तो वह प्रकृति के पेड़–पौधों–पत्तों आदि के चित्र बनाता।

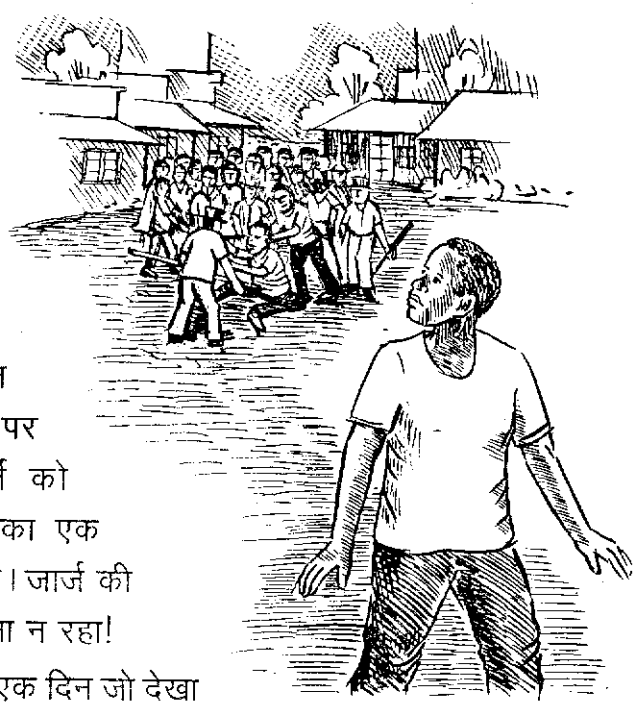

जब कला के शिक्षक ने जार्ज के चित्रों को देखा तो वह आश्चर्यचकित रह गए। जार्ज उनका सबसे प्रिय शिष्य बन गया। क्रिस्मस पर टीचर ने जार्ज को रंगीन पेंसिलों का एक डिब्बा भेंट किया। जार्ज की खुशी का ठिकाना न रहा!

फिर उसने एक दिन जो देखा वह उसे कभी न भूल पाया। भीड़ ने एक नीग्रो को पीट–पीट कर मार डाला। डर के मारे वह छिप गया। उसके साथ भी ऐसा ही हो सकता था।

वह इस अनुभव को कभी न भूल पाया। इससे उसे गहरा दुख पहुंचा। वह एक अच्छी दुनिया का सपना संजोने लगा, जिसमें रंग–भेद नहीं हो।

जार्ज अब छह फीट ऊंचा हो गया था। परंतु कपड़े धोते–धोते उसकी पीठ कुछ आगे को झुक गई थी।

अब जार्ज को रेल–मज़दूरों के एक गैंग के लिए खाना पकाने का काम मिला। इस दौरान उसने मेक्सिको का रेगिस्तान घूमा और वहां की मिट्टी का अध्ययन किया। सूरज की भीषण गर्मी से दिन में

रेत तप जाती थी। उसने रेगिस्तान के पौधों और फूलों के ढेरों चित्र बनाए। एक मुड़े हुए कागज़ पर उसने ''युक्का ग्लोरियोसा'' नामक विशालकाय पौधे का चित्र बनाया। बाद में इस चित्र को एक अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।

इस बार जब जार्ज ने स्कूल में दाखिला लिया तो पहली बार उसके बहुत से दोस्त बने। अपनी आजीविका के लिए उसने एक लांड्री–यानि धोबी की दुकान शुरू की। उसने अकार्डियन नाम का वाद्य–यंत्र बजाना सीखा और उस पर वह ढेरों लोकप्रिय धुनें बजाकर लोगों का दिल बहलाता। स्कूल के इलेक्शन में उसे ''सबसे अच्छे लड़के'' का खिताब मिला।

हाई–स्कूल खत्म करने के बाद उसने कैंसस के कालेज में दाखिले के लिए अर्ज़ी भेजी। जार्ज के नंबर अच्छे थे और कालेज ने उसे दाखिला दे दिया।

जार्ज अब खुश था। उसने गर्मियों की छुट्टियों में टाइपिंग और शार्टहैंड सीखी। फिर वह वाटकिंस दम्पत्ति से मिलने गया। चाचा ऐंडी और चाची मारिया उसे देख कर गद्–गद् हो गए। उनकी आंखों से खुशी के आंसू बहने लगे। कितना गर्व था उन्हें अपने जार्ज पर।

वह अपने पहले मां–बाप कार्वर दम्पत्ति से भी मिलने गया। उसे देख कर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। जल्दी ही आसपास के पड़ोसी उस नन्हे नीग्रो लड़के को देखने के लिए आने लगे। क्या जार्ज अब कालेज में पढ़ने जायेगा? ऐसा तो पहले कभी सुना नहीं!

''तुम आगे क्यों पढ़ना चाहते हो?'' मोज़िज कार्वर ने पूछा, ''कोई भी कालेज नीग्रो को दाखिला नहीं देगा।'' जार्ज ने हंसते हुए कहा, ''मुझे अभी बहुत कुछ और सीखना है, तभी भगवान अपने रहस्य मेरे लिए खोलेंगे।''

कार्वर दम्पत्ति ने जार्ज को आर्शिवाद दिया। उनकी शुभकामनायें हमेशा उसके साथ होंगी।

सितम्बर का महीना था। घुमक्कड़ जार्ज के दिल में एक नई उमंग थी। ट्रेन में सवार होकर वह कैंसस को रवाना हुआ। कालेज में दाखिला मिलने की उसे खुशी थी। उसका सपना साकार होने वाला था।

परंतु कालेज के प्रिंसिपल को जार्ज के नीग्रो होने की बात नहीं पता थी। ''कुछ गलती हुई है,'' उन्होंने कहा, ''यह कालेज नीग्रो को दाखिला नहीं देता है।''

जार्ज ठगा सा रह गया। उसे कुछ भी समझ में नहीं आया। उसने अर्जी को बहुत संभाल कर पढ़ा था। उसमें कहीं पर यह नहीं लिखा था कि कालेज नीग्रो को दाखिला नहीं देगा।

प्रिंसिपल ने जार्ज के हताश चेहरे को देखा। ''तुम कालेज की पढ़ाई क्यों करना चाहते हो?'' उन्होंने जार्ज से पूछा, ''तुमने हाई–स्कूल पास कर लिया है। एक नीग्रो के लिए शायद इतना काफी है।''

जार्ज उठ कर दरवाज़े की ओर चला। उसने कहा, ''मैं कालेज इसलिए जाना चाहता हूं क्योंकि मुझे कुछ करना है और उसके लिए मुझे तैयारी करनी है।''

जार्ज ने आहिस्ते से दरवाज़ा बंद किया और बाहर निकला। उसका दिल भारी था। दूसरी बार, उसे अपनी चमड़ी के रंग के कारण गहरा दुख झेलना पड़ा था।

हाई–स्कूल में उसके सबसे अधिक अंक आए थे, परंतु फिर भी कालेज में उसके लिए जगह नहीं थी! क्यों? ऐसा क्यों? उसने अपने आपसे दुखी होकर पूछा। बचपन में एक बार वह जंगल में छिप कर, चुपचाप रोया था। अब उसके पास न तो पैसे थे और न ही सिर छिपा कर रोने के लिए कोई जगह थी। वह वहीं एक बेंच पर बैठ गया। उसके सपने चकनाचूर हो गए थे और उसकी सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया था।

जार्ज ने फिर भी हिम्मत न खोई। शायद इसके पीछे भी भगवान की कुछ मर्ज़ी हो!

उस समय सरकार खेती करने के लिए लोगों को मुफ्त में ज़मीन दे रही थी। जार्ज भी कुछ ज़मीन पर खेती करने लगा। वह खाली समय में पढ़ता और चित्रकारी करता। वह अपनी हालत पर दुखी नहीं होना चाहता था, क्योंकि उससे फायदा कम और नुकसान ज़्यादा होता। काम करते रहना ही शायद सबसे अच्छा इलाज था।

कुछ समय बाद जार्ज को एक कालेज के बारे में मालूम पड़ा जो इंडियानोला में था। इसे अब्राहिम लिंकन के मित्र बिशप मैथ्यू ने शुरू किया था। वहां पर नीग्रो पढ़ सकते थे।

जार्ज ने वहां अपनी अर्ज़ी भेजी। इस बीच वह पैसा बचाने के लिए तरह–तरह के अलग–अलग काम करता रहा।

9 सितम्बर 1890 को, वह पैदल ही इंडियानोला की ओर चल पड़ा। वहां पहुंचने पर जब उसका कालेज में तुरंत दाखिला हो गया तो वह सफर की अपनी सारी थकान भूल गया।

जार्ज को रहने के लिए कोई जगह तलाशनी थी। कालेज के प्रिंसिपल डा. होल्मस ने कालेज में स्थित एक बेकार कोठरी को इस्तेमाल करने की, जार्ज को अनुमति दे दी। जार्ज ने वहां तत्काल

अपनी धोबी की दुकान शुरू कर दी। उसे ज़िंदा रहने के लिए कमाई भी करनी थी। उसकी कोठरी में हमेशा लड़कों की हंसी गूंजती रहती। वह अपने किस्से कहानियों और संगीत से उनका दिल बहलाता रहता था।

समय मिलते ही जार्ज चित्र बनाता। एक समय वह पेंटिंग को अपना व्यवसाय बनाना चाहता था। परंतु उसकी चेहती टीचर इडा बुड ने उसे ऐसा करने से रोका।

''तुम में बहुत हुनर है और तुम एक अच्छे कलाकार बन सकते हो। परंतु बहुत कम कलाकार ही अपनी कला से आजीविका चला पाते हैं और फिर तुम एक ....।''

जार्ज ने कहा, ''एक नीग्रो हो''।

इडा बुड ने कहा, ''मैंने तुम्हारी पेंटिंग अपने पिता को दिखायीं। वह आयोवा कृषि कालेज में प्रोफेसर हैं। उनका कहना है कि तुम्हें कृषि की पढ़ाई करनी चाहिए।''

आयोवा कृषि कालेज की गिनती देश के प्रमुख कालेजों में थी। वहां के रसायन शास्त्र और वनस्पतिशास्त्र के विभाग बहुत प्रसिद्ध थे। जार्ज को अच्छे नंबरों के कारण यहां आसानी से दाखिला भी मिल गया। नियमों के अनुसार नीग्रो लड़कों को होस्टल में रहना मना था। परंतु वहां प्रोफेसर विल्सन ने सभी नियमों को ताक पर रख कर जार्ज को अपने दफ्तर में रहने की अनुमति दे दी।

जार्ज ने कालेज में बहुत अच्छा किया। उसने बहुत से नये विषय पढ़े। आजीविका के लिए वह प्रयोगशाला में असिस्टेंट और खेतों में माली का काम करता। वह कालेज की हरेक गतिविधि में भाग लेता। कालेज के संगीत बैंड में भी वह नियुक्त हो गया।

समय मिलते ही वह कालेज के पास के दलदली इलाकों में घूमता। उसने वहां की मिट्टी का परीक्षण किया, खरपतवार और विभिन्न प्रकार की घासों का अध्ययन किया। यहां पर जार्ज की मुलाकात एक छोटे से लड़के–हेनरी वैलेस से हुई। हेनरी बाद में अमरीका का उप–राष्ट्रपति बना।

1894 में जार्ज ने कालेज की पढ़ाई समाप्त की। वह निश्चय ही कालेज का सर्वश्रेष्ठ छात्र था। उसकी पेंटिंग्स को भरपूर ख्याति मिली। जब जार्ज को डिग्री मिली तो सारा हॉल तालियों से गूंज उठा। जार्ज को कालेज में ही पढ़ाने की नौकरी मिल गई थी। यह गोरे, या काले, किसी के लिए भी एक गर्व की बात थी।

टीचर की हैसियत से जार्ज बेहद लोकप्रिय था। कालेज के शिक्षक और छात्र उसे बहुत चाहते थे। जल्द ही उसकी आर्थिक स्थिति बेहतर हो गई और वह प्रसिद्ध हो गया।

जार्ज को लोग अब प्रोफेसर कार्वर के नाम से बुलाते। क्या वह सच में खुश था? बाहर से शायद ऐसा लगता हो, परंतु अंदर से उसे संदेह था? क्या इस प्रकार वह अपने सपनों को साकार कर पायेगा? क्या कालेज की अट्टालिका में रह कर वह अपने गरीब नीग्रो भाई–बहनों की कुछ सेवा कर पायेगा?

उसे मारिया चाची के शब्द बार–बार याद आते, ''जब तुम पढ़–लिख जाओ, तो तुम नीग्रो लोगों को पढ़ाना। उनमें पढ़ने की बहुत भूख है!'' वह अपना ज्ञान उनके साथ कैसे बांटे? वह सोचता।

उसी समय उसे एक प्रसिद्ध नीग्रो, बुकर वाशिंगटन का पत्र मिला। उन्होंने जार्ज को ऐलाबामा की टस्कजी संस्थान में आकर पढ़ाने का निमंत्रण दिया था। ऐलाबामा बेहद पिछड़ा हुआ इलाका था। वहां के लोग अशिक्षित थे। ज़मीन इतनी बंजर थी कि उसमें कुछ भी पैदा ही नहीं होता था। क्या प्रोफेसर कार्वर यहां की दशा को कुछ सुधारेंगे?

बुकर ने लिखा, ''मैं अपने लोगों को पढ़ना–लिखना सिखा सकता हूं। मैंने स्कूल बनाने में उनकी मदद की है। परंतु मैं उनको खाना नहीं खिला सकता। इसलिए वह भूखे रहते हैं।''

कार्वर ने अपना सामान बांधा और टस्कजी संस्थान को रवाना हुआ। आयोवा कालेज को दुख हुआ। परंतु जार्ज को अपने लोगों के बीच जाना था। उसका काम टस्कजी में ही था। बरसों की खोज अब पूरी हुई थी। प्रकृति के रहस्यों को परत–दर–परत खोलने का मौका आया था। जार्ज की शिक्षा को अब सही दिशा मिली थी।

एक सपना पूरा हुआ

कार्वर अब दक्षिण में स्थित ऐलाबामा की ओर जा रहा था। वह ट्रेन की खिड़की से बाहर की ज़मीन को देख रहे थे। उपजाऊ मिट्टी वाले उत्तरी मैदान अब खत्म हो चले थे और अब मीलों तक केवल लाल मिट्टी वाली ही ज़मीन थी। बीच–बीच में कपास के खेत थे। कार्वर को ज़मीन इतनी बुरी नहीं लगी। शायद सालों से केवल कपास उगाने के कारण ज़मीन बंजर हो चली थी।

कार्वर ने गरीब, नीग्रो मज़दूरों, उनकी महिलाओं और बच्चों को भूखे–प्यासे खेतों में मेहनत करते देखा। वह सभी झुक कर खेतों में से कपास तोड़ रहे थे। उनकी आंखों में निराशा का भाव था। सारी ज़िंदगी धूप में जी–तोड़ मेहनत करना – बस यही थी एक नीग्रो की ज़िंदगी।

बुकर स्टेशन पर कार्वर को लेने आए। यह दोनों व्यक्ति एक ही उद्देश्य के लिए काम कर रहे थे – अपने लोगों को भुखमरी और गरीबी से उबारने के लिए।

शुरू में इस संस्था में लगभग कुछ भी न था – एक प्रयोगशाला भी न थी। संस्था की इमारत को किसी तरह बुकर और उसके

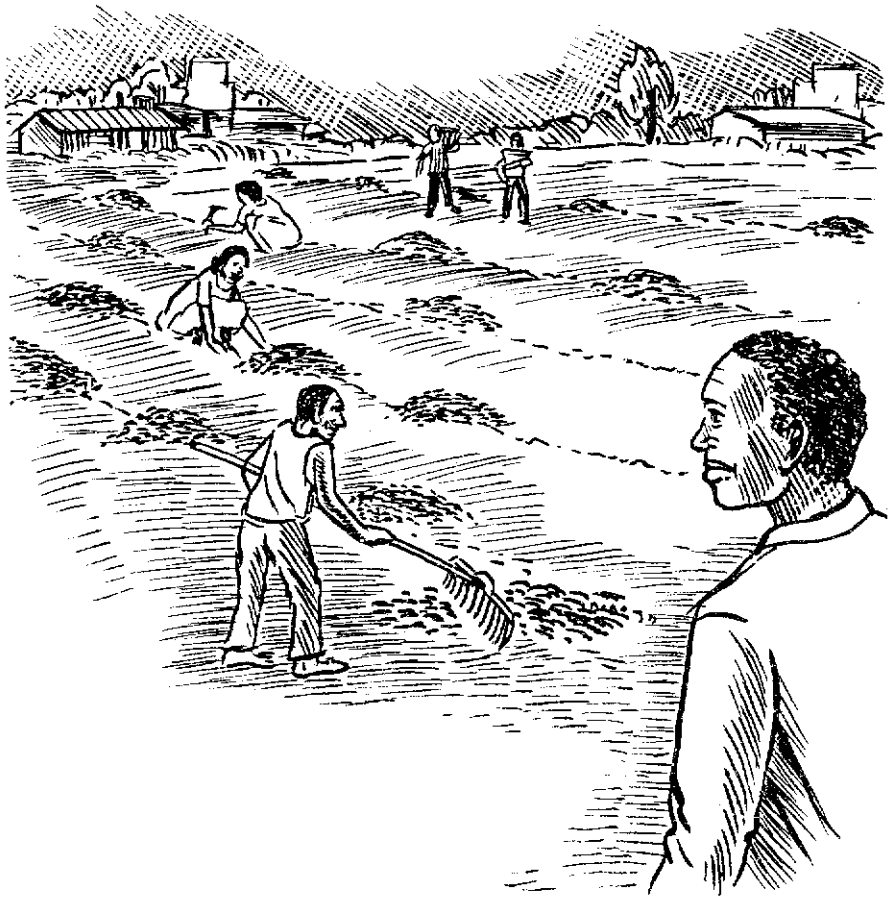

साथियों ने मिल कर बनाया था। इसके लिए सबसे पहले तो बुकर ने लोगों को ईंटे बनाना सिखाया! आगे का काम तो और भी मुश्किल था। परंतु अब बुकर की मदद करने के लिए कार्वर आ गए थे।

कार्वर ने तुरंत अपना काम शुरू कर दिया। उन्होंने बचपन से अब तक हमेशा मुश्किलों और चुनौतियों का सामना किया था। अब उनके सामने जीवन की सबसे बड़ी चुनौती थी। वह उसके लिए तैयार थे।

कालेज के कृषि विभाग की योजना केवल कागज़ पर बनी थी। दूध की डेरी के नाम पर एक बड़ा बर्तन, कुछ औज़ार और एक बूढ़ा घोड़ा था। शायद डेरी वाले कमरे में ही कार्वर को फिलहाल रहना पड़ेगा। कार्वर इसके लिए सहर्ष तैयार हो गए।

कार्वर ने स्कूल के आसपास की ज़मीन का मुआयना किया। स्कूल के पश्चिम की ओर नये कृषि विभाग की इमारत बनने वाली थी। खेती के प्रयोगों के लिए बीस एकड़ ज़मीन थी। उसके आगे की ज़मीन एकदम पथरीली और बंजर थी। पर कार्वर इससे निराश नहीं हुए। उनमें चुनौतियों को सफलताओं में बदलने की अद्‌भुत क्षमता थी।

उस समय कृषि–विज्ञान कोई लोकप्रिय विषय न था। किसानों के लड़कों को खेती से चिढ़ थी। उन्होंने खेती के काम से बचने के लिए ही स्कूल में दाखिला लिया था!

कार्वर का पहला काम तो अपने छात्रों का दिल जीतना था। उनका पहला लेक्चर सुनते ही बच्चे आश्चर्यचकित रह गए। कार्वर उन्हें अन्य प्रोफेसरों से बिल्कुल अलग लगे।

कार्वर ने छात्रों को हरेक चीज़ को बारीकी से देखने की प्रेरणा दी। प्रकृति ही सबसे अच्छी किताब है! "और अब बच्चों," प्रोफेसर ने कहा, "क्योंकि हमारे पास प्रयोगशाला नहीं है, इसीलिए क्यों न हम सब मिलकर एक प्रयोगशाला बनायें!" यह कैसे सम्भव होगा? बच्चे एक–दूसरे को अचरज से देखने लगे।

कार्वर अपने छात्रों को स्कूल के मैदान में पड़े कचरे के ढेर पर ले गए। उसमें से उन्होंने पुरानी बोतलें, शीशियां, टूटे हुए डिब्बे, बर्तन, कप आदि ढूंढे। उनके टीचर इस सब सामान का क्या करेंगे, इस बारे में बच्चों को कुछ भी नहीं मालूम था। परंतु इन्हें खोजने में बच्चे बड़े

व्यस्त और खुश थे। फिर कार्वर अपने छात्रों को लेकर एक घर से दूसरे घर गए। उन्होंने घर की पुरानी और फेंकने वाली चीज़ों को देने की विनती की। उन्होंने बहुत से पुराने लैम्पों, बोतलों और डिब्बों का ढेर इकट्ठा किया।

कार्वर ने सभी चीज़ों को बच्चों से साफ करवाया। मिट्टी के तेल की लालटेन की काली चिमनी में एक छेद किया गया। इस छेद से निकलता तेज़ प्रकाश सूक्ष्मदर्शी का प्रकाश स्रोत बन गया! एक पुरानी स्याही की बोतल के ढक्कन में छेद करके उसमें सुतली पिरो देने से एक बुन्सन–बर्नर बन गया! उन्होंने कबाड़ में से बहुत से उपकरण जुगाड़ किए।

बोतलों को साफ करके उनपर लेबिल चिपकाए गए और फिर उनमें रसायन भरे गए। डिब्बों में अलग–अलग मोटाई के छेद करके उनसे मिट्टी छानने की चलनी बनायीं गयीं। सभी छात्र अपने टीचर की जुगाड़ लगाने की अद्‌भुत क्षमता से बहुत प्रभावित हुए। वह अपने टीचर की बहुत इज़्ज़त करने लगे। इन पुरानी बोतलों और फेंके हुए डिब्बों से कार्वर, ऐलाबामा का पुनर्निमाण करने को तैयार थे! यह सभी उपकरण आज भी कार्वर संग्रहालय में रखे हैं।

अगले चरण में ज़मीन के बड़े इलाके को साफ किया गया। इसमें कार्वर ने भी श्रमदान किया। कार्वर ने लड़कों से पेड़ों से गिरे पत्तों, सड़े–गले पत्तों और गोबर को एकत्रित करने को कहा। इसे खाने की झूठन के साथ एक गड्ढे में दबा दिया गया। इस प्रकार बनी उम्दा खाद को मिट्टी में मिला कर उसे उर्वर बनाया गया।

जब हल चलाने के बाद खेत बुआई के लिए तैयार हुए तो कार्वर ने छात्रों से उसमें एक छोटी प्रजाति की मटर ''काओ–पी'' बोने को कहा।

जब इन पौधों में फल लगे तो वह इतने छोटे थे कि सभी छात्रों का शर्म से मुंह लटक गया। टीचर दर असल क्या चाहते थे?

परंतु कार्वर ने अपने प्रयोग ज़ारी रखे। उन्हें विश्वास था कि अंत में छात्र समझ जायेंगे। कार्वर 'काओ–पी' को लेकर चौके में गए और उन्होंने उससे स्वादिष्ट खाना बनाया।

अगली फसल उन्होंने शकरकंदी की ली। कार्वर ने कपास क्यों नहीं लगाई? छात्रों ने सोचा। शकरकंदी की बम्पर फसल हुई। छात्र अपने टीचर की कुशलता की दाद देने लगे। अब अन्य छात्र भी कार्वर की क्लास में भर्ती हो गए।

उसके बाद वसंत आई। कार्वर ने अब कपास बोने को कहा। वह अपनी योजना के अनुसार फसलों को बदल–बदल कर बो रहे थे। इससे मिट्टी अधिक उपजाऊ हो गई थी। अब मिट्टी कपास की बुआई के लिए तैयार थी।

उन्होंने मिट्टी, खाद और उपज के बीच का रिश्ता समझाया, ''ज़मीन में जितना डालोगे उतना ही वापिस मिलेगा।''

कपास की फसल इतनी अच्छी हुई कि उसे देखने के लिए दूर–दूर के किसान आए और उन्होंने उसे सराहा। प्रत्येक एकड़ में 250 किलो कपास पैदा हुआ। उसके बाद, कभी भी किसी ने प्रोफेसर पर शक नहीं किया।

जल्दी ही वह स्कूल की ज़रूरतों के लायक सब्ज़ियां उगाने लगे। कार्वर सुबह से लेकर देर रात तक काम में व्यस्त रहते। उन्होंने ऐलाबामा के पास की मिट्टी का परीक्षण किया, पौधों के नमूने इकट्ठे किए। उन्होंने बहुत समय जंगलों और दलदली इलाकों में बिताया। ''प्रकृति से इंसान की सभी आवश्यकतायें पूरी की जा सकती है,'' वह बार–बार कहते।

जब कभी कुपोषण से बीमार और कमज़ोर लोग उनके पास आते तो वह उन्हें जंगली घास खाने को देते। जंगली खरपतवार और घासों के विटामिनों से उनकी बीमारी ठीक हो जाती।

उन्होंने कृषि का पहला चलता–फिरता स्कूल शुरू किया। उन्होंने लोगों तक सीधा पहुंचने का निश्चय किया। इसके लिए कुछ औज़ारों और उपकरणां से लैस एक घोड़ा–गाड़ी तैयार की गई। इसमें प्रोफेसर के साथ कुछ छात्र भी होते। वह घरों, खेतों और बाज़ारों में रुकते। वहां पर वह किसानों को हल चलाने का, बगीचे लगाने का और सब्ज़ियां उगाने का सही प्रशिक्षण देते।

प्रोफेसर गांव की औरतों को सफाई और स्वास्थ्य के बारे में बताते। वह सस्ते में पौष्टिक आहार बना कर दिखाते। वह साधारण, रोज़मर्रा की चीज़ों से उन्हें अनेकों नई वस्तुऐं बना कर दिखाते।

''कोई भी चीज़ बेकार नहीं होती,'' कार्वर उन्हें याद दिलाते, ''प्रकृति में पाई जाने वाली सभी चीज़ों को दुबारा इस्तेमाल किया जा सकता है।''

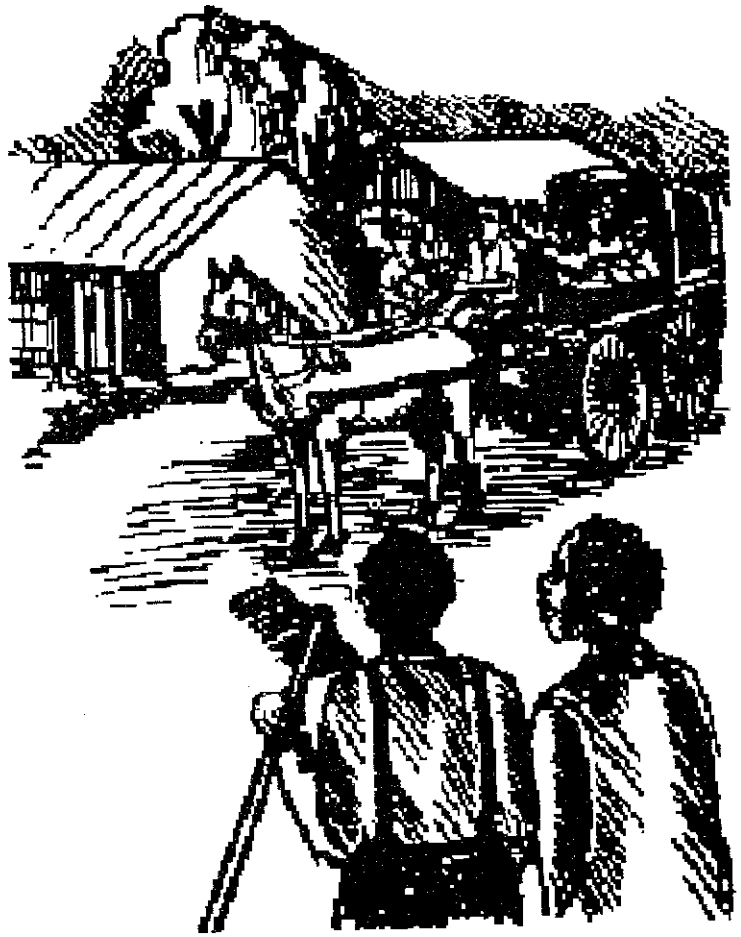

वह लोगों को प्रत्यक्ष चीज़ें करके या बनाकर दिखाते। लोग बड़ी तादाद में उनकी बातें सुनते और उनसे लाभान्वित होते। लोग लीक से हटना नहीं चाहते थे। उस समय नीग्रो लोग मूलतः मांस और शीरा ही खाते थे। कार्वर ने उन्हें सब्ज़ी उगाने और खाने के लिए प्रेरित किया, परंतु किसी ने उनकी बात न मानी। लोग बीमारियों के कारण मरने लगे। फिर भी वे कार्वर की बात मानने को तैयार न हुए। तब कार्वर ने एक जंगली टमाटर काटा और वह उसे खा गए।

''देखो मैं इसे खाकर मरा नहीं,'' उन्होंने कहा। टमाटर के गुणों से 'स्कर्वी' जैसी बीमारी को रोका जा सकता है। वह लोगों को अपने स्कूल के फार्म पर लाए जहां आलू, टमाटर, पत्ता गोभी, तरबूज और अन्य सब्ज़ियों की कतारें लगी थीं। सब्ज़ियों को उगाने से मिट्टी भी और उपजाऊ होती है। लोग स्कूल में अपने परिवारों के साथ आते। वहां सब्ज़ियों के नये–नये व्यंजन खाते और फिर अपने खेतों में जाकर उन्हें उगाते।

वह लोगों को फल–जंगली सेब, नाशपाती, रसभरी आदि खाने की सलाह देते। उन्होंने लोगों को अचार बनाने और सब्ज़ियों को सुखा कर रखने की तरकीब बताई। इस प्रकार उन्हें पूरे साल भोजन मिल सकता था। सूर्य की रोशनी, चीज़ें सुखाने का सबसे अच्छा साधन है। सूरज की रोशनी सब जगह मुफ्त में उपलब्ध है।

कार्वर किसी चीज़ को फेंकने के खिलाफ थे। अगर हम सोचें तो हर कचरे को करिश्मे में बदल सकते हैं। सुअर की चर्बी को लोग फेंक देते थे, परंतु उसका साबुन बनाया जा सकता था। शकरकंदी से मांड बनाना उन्होंने लोगों को सिखाया। वह लोगों से दरवाज़ों के पास फूल लगाने को कहते जिससे कि उनकी स्याह ज़िंदगी में कुछ रंगत आए।

धीरे–धीरे लोगों ने बहुत सी नई बातें सीखीं–सफाई, पुताई, दरी बुनना, पौष्टिक आहार आदि। धीरे–धीरे जागृति की नई लहर फैलने लगी। घर अब ज़्यादा साफ–सुथरे दिखने लगे। लोगों के चेहरे पर एक नई उमंग छा गई। ऐसा लगने लगा जैसे ज़िंदगी जीने का कुछ मतलब हो।

कार्वर की शोहरत चारों ओर फैली। रूस, चीन, जापान, भारत और अफ्रीका तक से लोग उनकी संस्था का काम देखने के लिए आने लगे।

मूंगफली से प्रोटीन की कमी पूरी होगी। एक मुट्ठी मूंगफली खाने से शरीर की अच्छी सेहत बनेगी। कार्वर ने लोगों को मूंगफली उगाने और खाने के लिए प्रोत्साहित किया।

परंतु मूंगफली को खायेगा कौन? मूंगफली तो केवल सुअरों को खिलाई जाती थी! कार्वर ने अपने छात्रों की सहायता से स्कूल में मूंगफली बोयी। उस समय कपास को एक प्रकार की बीमारी लग गई। सारे खेत बरबाद हो गए। कार्वर ने किसानों को कपास के पौधे जला कर मूंगफली लगाने की सलाह दी।

मूंगफली सबसे सस्ती फसल थी। उनको उगाने से मिट्टी और उपजाऊ बनेगी और किसान भी मालामाल होंगे। पर लोग मूंगफली को अपनाने को जल्दी तैयार न हुए। फिर कार्वर ने एक दिन पूरा खाना ही मूंगफलियों को आधार बनाकर बनाया। सूप, चिकन, ब्रेड, सलाद और आईस–क्रीम सभी मूंगफली की! मेहमान यह स्वादिष्ट खाना खाकर चकित रह गए।

कार्वर की जीत हुई। लोगों ने मूंगफली लगाना शुरू की। धीरे–धीरे मूंगफली की पैदावार इतनी अधिक हो गई कि लोगों को समझ नहीं आया कि वह क्या करें।

मूंगफली के भरे गोदामों का क्या होगा? फिर कार्वर दिन–रात अपनी प्रयोगशाला में काम करते रहे और उन्होंने मूंगफली से कई–नई चीज़ें बनायीं जैसे पीनट–बटर, मूंगफली का दूध, साबुन और कास्मेटिक्स भी! अथक शोध के बाद उन्होंने मूंगफली से कैंडी, स्याही, शू–पालिश और शेविंग क्रीम भी बनाई। छिलकों से खाद, बोर्ड और कृत्रिम संगमरमर भी बनाया।

उनके विचारों से उद्योग जगत में क्रांति आई। अब जंगलों के पेड़ों को काटने की बजाए लकड़ी के तख्तों को कृषि के कचरे से

बनाया जा सकता था। प्लास्टिक के युग की यह शरुआत थी। ऑटो उद्योग अब स्टील की जगह सेल्युलोज़ इस्तेमाल कर सकता था।

अपने जीवन काल में कार्वर ने मूंगफली से तीन सौ पच्चीस अलग–अलग चीज़ें बनायीं। कार्वर के अनुसार अगर कोई वनस्पति न होतीं तो भी लोग केवल शकरकंदी और मूंगफली पर ज़िंदा रह सकते थे।

मूंगफली के उद्योग ने अमरीका की अर्थ व्यवस्था ही बदल डाली। यह कार्वर के ही प्रयास से संभव हुआ।

फिर कार्वर ने शकरकंदी पर शोध शुरू किया। उन्होंने शकरकंदी से 118 अलग–अलग चीज़ें बनायीं। युद्ध के दौरान शकरकंदी के आटे के कारण ही लाखों भूखे लोगों का पेट भर पाया।

इस नेक वैज्ञानिक के शोध से सारी दुनिया के लोगों को लाभ हुआ।

कार्वर के पास रोज़ सैकड़ों पत्र आते। साधारण लोग, उद्योगपति और आम किसान कार्वर की राय जानना चाहते। लोग मिट्टी के और पौधों के नमूने भेजते और कार्वर उनकी समस्याओं का हल ढूंढते और उन्हें जवाब लिखते।

फ्लोरिडा के एक किसान ने अपनी बीमार फसल का एक नमूना भेजा। कार्वर ने उसे कारण सुझाया। किसान ने कार्वर के नाम 100 डालर का चेक भेजा। कार्वर ने चेक वापिस भेज दिया। ''भगवान हमसे मूंगफली उगाने के लिए पैसे नहीं लेते, तो फिर मैं उन्हें ठीक करने के लिए पैसे क्यों लूं?''

बुकर ने कार्वर का वेतन बढ़ाना चाहा परंतु कार्वर ने साफ मना कर दिया, ''मैं ज्यादा पैसों का क्या करूंगा?''

1908 में कार्वर मोज़िज दम्पत्ति को दुबारा मिलने गए। वह अपने साथ अपनी मां का चरखा वापिस लाए चरखे की वह बहुत प्यार से देखभाल करते।

बुकर की मृत्यु से कार्वर को गहरा अफसोस हुआ। परंतु अपने वायदे के अनुसार कार्वर टस्कजी में ही रहे।

फार्म और फैक्ट्रियों ने कार्वर के काम से भरपूर लाभ उठाया। परंतु कार्वर तो अपने मासिक वेतन के चेक को भी नहीं भुनाते थे। उनकी तनख्वाह इकट्ठी होती जी और अंत में ज़रूरतमंद छात्रों के काम आती थी।

ऐलाबामा जो एक पिछड़ा प्रदेश था अब अमरीका के सबसे विकसित इलाके में बदल गया था।

कोई उनकी तारीफ करता तो कार्वर बस यह कह देते, ''अगर मैं नहीं होता तो भगवान किसी और से यह काम करवाता।''

कार्वर को बहुत से पुरस्कारों और उपाधियों से सम्मानित किया गया। उन्हें बहुत ऊंची तनख्वाह का लालच दिया गया। परंतु कार्वर ने उन्हें स्वीकार नहीं किया, "मैंने बुकर से वादा किया था और मैं टस्कजी में ही रहूंगा।" वह सारी दुनिया की सेवा करना चाहते थे। और धन का उन्हें कोई लोभ न था।

उन्हें केवल सोने के लिए एक खाट चाहिए थी, जहां से वह भगवान की सृष्टि को निहार सकें और दुनिया को बेहतर बनाने का सपना संजो सकें।

आविष्कारक थामस ऐडीसन और हेनरी फोर्ड कार्वर के मित्र बने। कार्वर का महात्मा गांधी के साथ पत्र–व्यवहार हुआ। कार्वर ने गांधीजी के लिए एक सरल भोजन की सूची भी बना कर भेजी थी।

कार्वर को जगह–जगह भाषण देने के लिए बुलाया जाता। संस्थान के लिए पूंजी जुटाने के लिए वह पियानों के संगीत समारोह करते।

इस सब के बावजूद वह ऐलाबामा में बहुत से स्थानों पर न तो जा सकते, न खा सकते थे क्योंकि वह नीग्रो थे। कार्वर अंत तक मरिया चाची के शब्द नहीं भूले। उन्होंने नीग्रो उत्थान के लिए बहुत कुछ किया।

5 जनवरी, 1943 को कार्वर का देहांत हुआ। वह पलंग पर एक क्रिस्मस का कार्ड पेंट कर रहे थे। उनके आखिरी शब्द थे, "*दुनिया में शांति हो और सभी लोग खुशहाल हों।*"

जो काम जार्ज वाशिंगटन कार्वर ने अपने जीवन में किया उसे लोग कभी नहीं भूलेंगे। कुछ महान लोग समय की रेत पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं। कार्वर एक ऐसे ही महापुरुष थे।

❑❑❑

होम–वर्क

एक बच्ची स्कूल नहीं जाती,
बकरी चराती है।
वह लकड़ियां बटोरकर घर लाती है,
फिर मां के साथ भात पकाती है।

एक बच्ची किताब का बोझ लादे स्कूल जाती है,
शाम को थकी–मांदी घर आती है।
वह स्कूल से मिला होम–वर्क,
मां–बाप से करवाती है।

बोझ किताब का हो या लकड़ी का,
दोनों बच्चियां ढोती हैं।
लेकिन लकड़ी से चूल्हा जलेगा, तब पेट भरेगा,
लकड़ी लाने वाली बच्ची, यह जानती है।
वह लकड़ी की उपयोगिता पहचानती है।
किताब की बातें, कब, किस काम आती हैं
स्कूल जाने वाली बच्ची
बिना समझे रट जाती है।

लकड़ी बटोरना, बकरी चराना,
और मां के साथ भात पकाना,
जो सचमुच गृह–कार्य हैं,
होम–वर्क नहीं कहे जाते हैं।
लेकिन स्कूल से मिले पाठों के अभ्यास,
भले ही घरेलू काम न हों,
होम–वर्क कहलाते हैं।

ऐसा कब होगा,
जब किताबें सचमुच के होम–वर्क (गृह–कार्य) से जुड़ेंगी,
और लकड़ी बटोरने वाली बच्चियां भी
ऐसी किताबें पढ़ेंगी?

– श्याम बहादुर नम्र